का घोल बना कर छिड़काव करें। इसके अलावा गन्धी बग लगनेपर 2 प्रतिशत का मैलाथियान 20 किग्रा० प्रति हेक्टेयर या नीम तेल का छिड़काव करें।

10. **कटाई एवं मड़ाई :** काला नमक धान की नर्सरी डालने के दिन से 145 से 150 दिन के अन्दर फसल पक जाती है। धान की बाली में नीचे की तरफ से 2 से 4 दाने हरे हो तभी धान की कटाई करें। कटी फसल को खेत में अधिक दिन तक नहीं रखना चाहिए क्योंकि बारिश होने पर बीजों का पुनः अंकुरण हो सकता है साथ ही साथ बालियों पर तेज धूप लगने से बालियों के फटने की सम्भावना रहती है जिससे धान का एरोमा (सुगन्ध) खत्म हो जाता है।

11. **उपज :** काला नमक धान की उपज 4 कुन्टल प्रति बीघा (20 मण्डी) प्राप्त होता है।

काला नमक चावल की पौष्टिकता

अवयव	काला नमक चावल	संकट चावल	मात्रा
प्रोटीन	7.9	5.9	% प्रति 100 ग्राम
फैट	1.3	0.15	% प्रति 100 ग्राम
कार्बोहाईड्रेट	85.43	84.59	% प्रति 100 ग्राम
एनर्जी	376	363	कैलोरी प्रति 100 ग्राम
कैल्शियम	12	10	मिली ग्रा० प्रति 100 ग्राम
आयरन	1	0.2	मिली ग्रा० प्रति 100 ग्राम
क्रूयडफाइबर	0.36	0.2	% प्रति 100 ग्राम

स्रोत :- क्रिसटीन लेबोरेटरी, बैंगलोर 2013 ।

काला नमक चावल में अन्य चावलों के तुलना में प्रोटीन, आयरन, फाइबर अधिक होता है।

''वर्तमान परिवेश में जलवायु परिवर्तन को देखते हुए काला नमक धान की खेती करने के तरीकों में भी कुछ बदलाव लाना आवश्यक है।''

शोहरतगढ़ एन्वायरन्मेंटल सोसाइटी

-: प्रधान कार्यालय :-

9 प्रेमकुंज, आदर्श कालोनी शोहरतगढ़,
सिद्धार्थनगर - 272205

-: रिजनल शाखा :-

एमएमआईजी 1/28 प्रथम तल, सेक्टर-ए
सीतापुर रोड योजना, लखनऊ- 226021

-: सहयोगी संस्था :-

जमशेद जी टाटा ट्रस्ट, मुम्बई

Ptd. Shanker Offset Printers, S.Nagar, M.-9935282540

काला नमक धान

काला नमक चावल भारत में सबसे अच्छी गुणवत्तापूर्वक खुशबुदार चावलों में से एक है। इसकी भूसी का रंग काला होने के कारण चावल की इस प्रजाति को काला नमक चावल का नाम दिया गया। भारत में इस काला नमक धान की खेती बौद्धकाल (600 ई०पू०) के समय से की जा रही है। काफी समय तक पूर्वी उत्तर प्रदेश में उत्पादित चावल की किस्मों में काला नमक का एक प्रमुख स्थान रहा। इसका खेती मुख्यतः पूर्वी उत्तर प्रदेश के सिद्धार्थनगर, सन्तकबीरनगर, महाराजगंज, बस्ती, गोण्डा एवं गोरखपुर जिलों के तराई इलाकों में किया जाता रहा है। बर्डपुर, निचलौल एवं सिद्धार्थनगर के आस-पास के क्षेत्रों में अभी भी उच्च श्रेणी के कालानमक की खेती की जा रही है। 1990 तक पूर्वी उत्तर प्रदेश में चावल की खेती के 8 प्रतिशत भाग पर काला नमक चावल की खेती की जाती थी परन्तु इसके द्वारा किसानों को होने वाले मुनाफे में कमी, इसके लंबे आकार, अनाज की गुणवत्ता में कमी (विशेषतः स्वाद एवं खुशबु में कमी), महामारी, गुणवत्ता युक्तबीजों एवं संसाधनों की अनुपलब्धता एवं शोध सहायता के अभाव के कारण वर्ष 2000 तक काला नमक का उत्पादन क्षेत्र मात्र 1 प्रतिशत ही रह गया है। पिछले 5 वर्षों से शोहरतगढ़ एन्वायरन्मेंटल सोसाइटी किसानों को पुनः काला नमक चावल के उत्पादन के लिए प्रेरित कर रही है।